उत्तर- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन उपनिवेशवाद विरोधी एक व्यापक आन्दोलन था। इसके अन्तर्गत साम्राज्यवाद विरोधी विचारधारा को लोक बनाकर राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा जनता के सहयोग से ब्रिटिश शासन का अंत किया गया इस आन्दोलन की प्रकृति को विस्तृत संदर्भों में समझे जाने की आवश्यकता है।

इस आन्दोलन का प्रारंभिक स्वरूप उदारवादी था। जिसमें प्रारंभिक राष्ट्रवादियों जैसे- नौरोजी, डब्लू सी बनर्जी, फिरोजशाह मेहता इत्यादि का नेतृत्व था। उदारवादियों की सहायता से ए०ओ० ह्यूम ने एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप में कांग्रेस का गठन किया। इस समय आनदोलन के नेताओं ने संवैधानिक मांगों से सरकार के समक्ष अपनी मांगों को प्रस्तुत किया। इनका मुख्य उद्देश्य ब्रिटेन जैसी उदारवादी शासन की स्थापना एवं सरकार में सहभागिता था।

Scanned with CamScanner

आन्दोलन के अगले चरण में बाल गंगा धर तिलक, लाला लाजपत राय तथा विपिन चन्द्रपाल जैसे उग्र विचारधारा वाले नेताओं का उदय हुआ और आन्दोलन का स्वरूप **उग्रवादी** हो गया। इस प्रकृति ने कांग्रेस का गरम दल एवं नरम दल में विभाजन हो गया।

उग्र विचार वांले नेताओं के प्रभाव में युवा ने आन्दोलन को **क्रांति कारी** स्वरूप प्रदान किया जिसे ब्रिटिश शासन द्वारा क्रांतिकारी आतंकवाद की संज्ञा दी गई। क्रांतिकारी आन्दोलन को दो चरणों में बाँटा जा सकता है- प्रथम चरण में 1905 से 1915 तक विभिन्न क्षेत्रीय क्रांतिकारी संगठनों ने नतृत्व किया जबकि 1924 के बाद द्वितीय चरण में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन सोशलिस्ट एसोशिएशन ने अखिल भारतीय स्तर पर क्रांतिकारियों का नेतृत्व किया।

आन्दोलन ने 1905 के बंगाल विभाजन के बाद **स्वदेशी** स्वरूप को ग्रहण किया। यह राष्ट्रीय आन्दोलन का एक नया रूप था जिसके अंतर्गत विदेशी वस्तुओं के बहिस्कार के साथ स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर बल दिया गया। यह आन्दोलन का व्यापक स्वरूप था पहली बार जन आन्दोलन के रूप में शासन की विरोध किया गया।

Scanned with CamScanner

गाँधी जी द्वारा भारत के सक्रिय आन्दोलन में भागीदारी के बाद राष्ट्रीय आन्दोलन ने **गाँधीवादी** स्वरूप ग्रहण किया। यह एक नई प्रकार की संकल्पना थी जिसमें ''सत्याग्रह'' एवं 'अहिंसा' पर बल था। आन्दोलन के इस चरण में असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन जैसे नए-नए प्रयोग किए गए। गाँधी जी राष्ट्रीय नेता बन गए और राष्ट्रीय आन्दोलन पूर्ण रूप से जन आन्दोलन बन गया।

राष्ट्रीय आन्दोलन में 1917 के रूसी क्रांति के बाद **वामपंथी** स्वरूप भी देखने को मिलता है। प्रारंभ में कम्युनिष्ट पार्टी के अंतर्गत वामपंथ सक्रिय रहा तथा इन्होंने प्रत्यक्ष संघर्ष का भी प्रयास किया किन्तु सरकार की दमनात्मक कार्य-वाही से जब कम्युनिस्टों का पतन हुआ तो कांग्रेस समाजवादी पार्टी के अंतर्गत वामपंथ सक्रिय रहा।

सम्पूर्ण राष्ट्रीय आन्दोलन की अवधि में **लोकतांत्रिक** विचारधारा की मुख्य भूमिका रही तथा स्वतंत्रा-समानता-बंधुत्व जैसे प्रजातांत्रिक आदर्शों की स्थापना इसका मुख्य उद्देश्य रहा और इसीलिए आन्दोलन जन आन्दोलन में परिणत हो गया, यद्यपि आरंभ में यह उच्च मध्यम वर्गीय बुद्धिजीवी वर्ग की आकांक्षाओं से प्रेरित रहा।

राष्ट्रीय आन्दोलन के सम्पूर्ण काल में इसका **धर्मनिरपेक्ष** स्वरूप भी बना रहा। यद्यपि मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसी संस्थाओं की स्थापना के अंतर्गत सांप्रदायिक तत्वों की सक्रियता रही किन्तु इसका धार्मिक रूप प्रकट नहीं हुआ।

Scanned with CamScanner